International Journal of Applied Research 2019; 5(5): 286-289

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(5): 286-289
www.allresearchjournal.com
Received: 20-09-2019
Accepted: 22-10-2019

Mk- vpuk flg
विश्वविद्यालय गृह विज्ञान विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विष्वविद्यालय, मधेपुरां, बिहार, भारत

vu|lfpr tkfr ,oe lkekU; J.kh d Nk= ,oe Nk=kvk dh l`tukRedrk % ,d r|yukRed v/;;u

Mk- vpuk flg

l{ki
प्रस्तुत शोध पत्र में अनुसूचित जाति एवम् सामान्य कोटी के छात्र एवम् छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस षोध के लिए शोधार्थी ने मधेपुरा षहरी एवम् देहाती क्षेत्र के कुल 120 में से 60 लड़के एवम् 60 लड़कियों का चयन किया गया था। जिसमें 30 आरक्षित कोटी के लड़के एवम् साथ ही 30 आरक्षित कोटी के लड़की विद्यार्थी साथ ही 30 सामान्य कोटी के लड़के एवम् साथ ही 30 सामान्य कोटी के लड़की विद्यार्थी का चयन किया गया था। इस शोध प्रदत्तों के संतुलन के लिए मानवीकृत उपकरण जो बाकर मेहंदी द्वारा निर्मित परीक्षण हैं, जिसे प्रयोग किया गया। इस शोध में सामयिकीय गणना के लिए एस.पी.एड. एड– साफ्टवेयर का उपयोग किया गया। सांख्यिकी विश्लेशण हेतु परीक्षण का प्रयोग करने पर पाया गया कि अनुसूचित जाति एवम् सामान्य कोटी के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता में काफी अंतर है। यह शोध समाज के लिए काफी प्रेरक साबित है। जिससे समाज के जनमानस का विकास संभव है।

e|[; 'kCn % अनुसूचित जाति एवम् सामान्य श्रेणी, सृजनात्मकता, छात्र एवम् छात्राएँ

iLrkouk %

सृजनात्मकता मानव के क्रियाकलापों एवं निष्दति के लिए आवश्यक है। सृजनात्मक का अर्थ वैज्ञानिको या कलात्मक सर्जन से नहीं है, सृजनात्मक किसी भी व्यक्ति में पाई जाती है। समाज में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य या व्यवसाय में सृजनात्मकता पाई जाती है। कोई भी व्यक्ति मुक्त अभिव्यक्ति जो बालक भाशा, दृश्य, कला, संगीत गति एवम् गत्यात्मकता के द्वारा व्यक्त करता है तथा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है इससे उसमें प्रतिबोधात्मक स्पष्टता आती हैं एवम् अभिव्यक्ति हेतु उसमें संवेगात्मक, गहन आती है, बालक के व्यवहार में यही परिवर्त्तन सृजनात्मकता कहलाता है।

मार्कसवाद के अनुसार, सृजनात्मकता मानवीय क्रियाकलाप की वह प्रक्रिया है, जिसमें गुणागत रूप से नूतन भौतिक तथा आत्मिक मूल्यों का निमार्ण किया जात है। प्रकृत्ति प्रदत्त भौतिक सामग्री में से तथा वस्तुगत जगत की नियमसंगतियों के संतान के आधार पर समाज की विभिन्न आवश्यकताओं की प्राप्ति करने वाले नये यथार्थ की निमार्ण करने की मानव क्षमता ही सृजनात्मकता है। जिसकी उत्पत्ति श्रम की प्रक्रिया में हुई है। सृजनात्मकता निमार्णशील क्रियाकलाप के स्वरूप से निर्धारित होते है।

मार्क्सवादी – लेनिनवादी सिद्धांत के अनुसार सृजन की प्रक्रिया में कल्पना समेत मनुश्य की समस्त आत्मिक षक्तियां और साथ ही वह दक्षता भाग लेती है, जो प्रषिक्षण एवम् अभ्यास से हासिल होती है तथा सृजनषील चिंतन को मूर्त रूप देने के लिए आवष्यक होती है।

विषिश्ट बालक

वह बालक, जो मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक आदि विषेशताओं में औसत से विषिश्ट हो, और यह विषिश्ट हो और यह विषिश्टता स्तर की हो कि उसे अपने विकास के लिए विषेश प्रषिक्षण की आवष्यकता हो, विषिश्ट बालक कहलाता है।

विषिश्ट बालकों को निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. प्रतिभाषाली बालक
2. सृजनषील बालक
3. पिछड़े बालक
4. मन्द बुद्धि बालक
5. वंचित बालक
6. सम्स्यात्मक या संवेगात्मक दृश्टि से पिछड़े बालक
7. बाल अपराधी

Correspondence
Mk- vpuk flg
विश्वविद्यालय गृह विज्ञान विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विष्वविद्यालय, मधेपुरां, बिहार, भारत

l`tukRedrk ckydksa dh igpku &

सृजनात्मक बालक सामान्य बालकों के सामान ही व्यवहार करते पाये जाते है अतः सृजनात्मक बालकों की पहचान निम्नलिखित हैः–

1. ये बालक विस्तृत रूचियों को रखते है।
2. ये स्वतः जागरूक होते है।
3. यह जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते है।
4. ये दुसरों के विचारों के आदान–प्रदान में रूचि लेते है।
5. यह बालक भावी बुद्धि के होते है।
6. यह षाब्दिक कौषल में निपुण होते है।
7. ऐसे बालक आत्मविष्वासी व साहसी प्रवृत्ति के होते है।
8. इन बालकों का समायोजन प्रतिभाषाली बालकों जैसा होता है।

l`tukRedrk dh fo'k{krk,¡ &

हरलोक ने सन् 1978 में सृजनात्मकता की कुछ प्रमुख विषेशताएँ बतालाएँ जो निम्नलिखित हैं –

1. सृजनात्मकता एक योग्यता है उत्पादन नहीं है।
2. सृजनात्मकता चाहे मौखिक हो या लिखित या मूर्त हो या अमूर्त प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति के लिए यह अभूतपूर्व होती है यह किसी नए और निम्न उत्पादन का मार्ग निदेषन करती है।
3. सृजनात्मकता की प्रक्रिया लक्ष्य निर्देषित होती है या तो व्यक्ति के लिए लाभदायक होती है अथवा यह समुह और समाज के लिए भी लाभदायक होती है।

इस प्रकार सृजनात्मकता व्यक्ति के जीवन का ऐसा गुण होता है, जिसमें परम्परागत पद्दतियों से अलग रहकर नवीनता एवं मौलिता का समावेष होता है। कोई कार्य इस प्रकार से सम्पादित किये जाये कि उस कार्य को किसी और ने न किया हो तब वह कार्य सृजनात्मकता माना जाता है। जैसे–मानव का चाँद पर रखा पहला कदम, नये–नये अविश्कार, इन्टरनेट, कम्प्यूटर, दूरभाश के आधुनिक साधन, विज्ञान व वाणिज्य में प्रगति आदि सृजनात्मकता की ही देन है। यद्यपि व्यापक तौर पर सृजनात्मकता में ही मौलिकता के अतिरिक्त अन्य घटक भी षामिल होते है, जैसा गिलगोर्ड ने लिखा है ''सृजनात्मकता बालक में न केवल मौलिकता अपितु नम्यता, प्रवाहिता और प्ररणात्मक स्वभाव के गुण भी षामिल है।''

वस्तुतः सृजनात्मकता जीवन की सृजनात्मकता अभिव्यक्ति है। सृजनात्मकता से आराम मनुश्य की उस समता से है जो कुछ नया व मौलिक कार्य करने हेतु प्रेरित करती है। प्रत्येक प्राणी में अपने प्रजातीय गुणों के अनुसार सृजनषीलता होती है। किन्तु मनुश्य में अपनी उच्य मानसिक योग्यता के कारण सृजनषीलता अपेक्षाकृत अधिक होती है। कुद व्यक्ति अधिक सृजनषील होते हैं तथा कुछ कम।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ''सृजनात्मक'' सर्वाधिक महत्वपूर्ण, सम्मोहन व चिन्ताकर्शक प्रकरण है। क्योंकि मानव समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित व परिवर्तन करने वाले आबिर्क, मनोवैज्ञानिक एवम् तकनीकी आदि विविध क्षेत्रों के विभिन्न आयामों में द्रुतगति से हुई प्रगति वस्तुतः व्यक्ति विषेश की ''सृजनात्मक योग्यता'' पर ही आधारित है। मानव में सृजनात्मकता षक्ति होती है, जिसके कारण समाज के विकास में सहायता मिलती हैं लगभग समुचा मानसिक क्रिया कलाप सृजनात्मकता पर आधारित है। जब कोई इंजिनियर नई मषीन बनाता है, चित्रकार अपने भावो को कलाकृति के द्वारा प्रकट करता है तथा जब एक षोधार्थी अपनी षोध में नयी कृति को स्थापित करता हैं, ये सारे अपनी सृजनात्मक षक्ति का उपयोग करके ही किसी अविश्कार तक पहुँच पाते है।

सृजनात्मकता व्यक्ति के मानसिक योग्यता पर निर्भर है। बालक जैसे बड़ा होता है उसकी मानसिक योग्यता का भी विकास होने लगता है। बालक जिस वातावरण में पलता–बढ़ता है, वहीं से उसके मानसिक योग्यता का विकास देखा गया है। यानि वातावरण का सीधा प्रभाव हमारे मानसिक योग्यता पर पड़ता है। इस जैसे–जैसे मानसिक योग्यता का विकास होता है वैसे–वैसे सृजनात्मकता का भी तेजी से विकास होने लगता है। इस प्रकार हम पाते है सृजनात्मकता का विकास करने पर मानसिक योग्यता विकसीत हो जाती है। अर्थात हम कह सकते है कि बुद्धि–लब्धि और सृजनात्मकता एक दुसरे के पुरक है।

पृथ्वी पर जितने भी प्राणी है, सृजनात्मकता लगभग सभी प्राणियों में पायी जाती है। किसी में कम किसी में ज्यादा, पर होती सभी में है, सिर्फ मात्रा का अंतर होता है। जैसे–अध्यापक, कर्मचारी, इंजिनियर, माता–पिता, नाई, आदि सभी अपने–अपने क्षेत्र में सृजनषील है एवम् समाज को नये विधि के द्वारा कार्य करने के लिए लाभकारी सिद्ध होकर स्मरणीय है।

l`tukRedrk ds pkj rRo fuEu gSa &

1. प्रवाह – प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या से संबंधित अधिकाधिक विचारों या प्रत्युत्तरों की प्रस्तुति से है।
2. विविधता –विविधता से तात्पर्य किसी समस्या पर किए गए प्रत्युत्तरों या विकल्पों में विधिता होने से है।
3. मौलिकता – मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किए गए विकल्पों का उत्तरों का असामान्य अथवा अन्य व्यक्तियों के उत्तरों से निम्न होने से है।
4. विस्तारण – विस्तारण से तात्पर्य दिये गये विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या, व्यापक पूर्ति या गहन प्रस्तुतीकरण से होता है।

आधुनिक युग में तीव्र गति से हो रहे वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक प्रगति व विकास के आधुनिकीकरण ने मानव को इतना जटिल तथा समस्याग्रस्त बना दिया है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की आवष्यकता स्वीकार किये जाने लगा है। वर्त्तमान समय में समस्याग्रस्त जटिल समाज सृजनात्मक व्यक्तियों की अत्याधिक भाग है। अतः वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों को अधिक–से–अधिक अर्जित करने के लिए सभी क्षेत्रों में सृजनात्मक व्यक्तियों को खोजना एक राश्ट्रीय आवष्यकता बन गई है।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत षोध–पत्र में सृजनात्मकता को आश्रीत चर के रूप में रखा गया है।

v/;;u & mís';

1. अनुसूचित जाति एवम् सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के आरक्षित श्रेणी के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर की जाँच करना।
3. लिंग भेद के आधार पर सामान्य श्रेणी के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर का तुलना करना।
4. षहरी एवम् ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवम् सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. लिंग भेद के आधार पर अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के स्तर की तुलना करना।

ifjdYiuk,&

1. सभी अनुसूचित जाति एवं सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकतामें सार्थक कोई अंतर नहीं है।

2. सभी ग्रामीण एवम् षहरी क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवम् सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई अंतर नहीं है।

lkfgR;koyksdu&

प्रस्तुत षोध पत्र के लिए षोधार्थी द्वारा भारत एवम् विदेषों में हुए षोध कार्यो का पूर्ण अध्ययन किया गया।

सृजनात्मकता से संबंधित षोध अध्ययन निम्न है –

सिम्पसन एवम् नेन्सी डे (1999) : के अनुसार ''प्रतिभाषाली छात्रों की सृजनात्मकता प्रेरणा एवं उनकी उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन'' – में पाया गया कि प्रतिभाषाली छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का सृजनात्मकता से सीधा संबंध देखा गया है।

सिंह, मानवीर, (2014) : बोर्ड के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके षैक्षिक बोडो के प्रभाव का अध्ययन – में पाया कि

1- CBSE तथा UP ठवंतक के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों की बुद्धि में तुलनात्मक दृश्टि से कोई अन्तर नहीं है, जो भी अंतर दिखाई दे रहा है, वह निरर्थक है अर्थात् CBSE तथा UP Board के विद्यार्थियों के बुद्धि एक समान है।

2- CBSE तथा UP ठवंतक के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं के बालक विद्यार्थियों की बुद्धि में तुलनात्मक दृश्टि से कोई अंतर नहीं है। अर्थात् दोनों षैक्षणिक संस्थाओं के विद्यार्थियों की बुद्धि पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

3- CBSE तथा UP ठवंतक के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं की बालिका विद्यार्थियों की बुद्धि में उनके षिक्षा बोर्डो के आधार पर तुलनात्मक दृश्टि से कोई अंतर नहीं है, जो भी अंतर दिखाई दे रहा है, वह निरर्थक है। अतः कहा जा सकता है कि षिक्षा बोर्डो का बालिका विद्यार्थियों की बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

4- CBSE तथा UP ठवंतक के कला वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि में उनके षिक्षा बोर्डो के कारण कोई अंतर नहीं है।

5- दोनों ही प्रकार की षिक्षा संस्थाओं के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि में तुलनात्मक दृश्टि से कोई अंतर नहीं है।

षर्मा, ष्वेता (2006): ''मूकबधिर बालकों की सृजनात्मकता और षैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन''। निश्कर्श में यह पाया गया कि मूकबधिर बालकों की षैक्षिक उपलब्धि व सृजनात्मकता में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया ।

सेनी, संगीता (2010): ''उच्च प्राथमिक स्तर पर मूकबधिर तथा सामान्य बालकों की सृजनात्मकता तथा कलात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन''। निश्कर्श में पाया गया कि मूकबधिर बालकों की सृजनात्मकता तथा षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

blh izdkj ls &

पानीनगर, कविता (2009): ''निजि एवं राजकीय माध्यमिक स्तर की छात्रों की सृजनात्मकता का तुलनात्मकता अध्ययन''। इस अध्ययन से यह निश्कर्श निकलता है कि निजी एवं राजकीय विद्यालय में माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया। षोध विवि प्रस्तुत षोध में सवेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्ष प्रस्तुत अध्ययन में षोधकर्त्ता द्वारा जौनपुर षहर के कुल 120 विद्यार्थियों जो उ राजकीय उ निजी विद्यालयों से लिया गया। उपकरण प्रस्तुत षोध में षोधकर्त्ता ने मानवीकृत उपकरण का प्रयोग किया है, जो कि बाकर मेहंदी द्वारा निर्मित परीक्षण है।

fo'ys"k.k &

Vscy la[;k&1% अनुसूचित जाति एवम् सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की तुलना से प्राप्त आँकड़ा निम्नलिखित है – अनुसूचित जाति एवम् सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान के आधार पर तुलना

vk;ke	lewg	la[;k	e/;eku	ekud fopyu	Vh&eku	lkFkZdrk dk Lrj
प्रवाहिता	अनुसूचित जाति	30	38.63	12.60	1.62	
	सामान्य श्रेणी	30	43.26	18.19		
लचीलापन	अनुसूचित जाति	30	21.61	9.82	1.44	
	सामान्य श्रेणी	30	24.39	11.43		
मौलिकता	अनुसूचित जाति	30	16.41	7.6	2.50	
	सामान्य श्रेणी	30	19.52	6.0		

प्रदत्त सारणी संख्या – 1 से यह स्पश्ट है कि प्रवाहिता आयाम में सामान्य श्रेणी के प्राप्तांकों का मध्यमान 13.26 प्राप्त हुआ। जो कि वरीयता सूची में प्रथम स्थान पर है। इस प्रकार हम पाते है कि सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या – 1 अस्वीकृत किया गया है।

Vscy la[;k&2% xzkeh.k ,oe~ 'kgjh {ks= ds vuqlwfpr tkfr ,oe~ lkekU; Js.kh fo|kfFkZ;ksa dh l`tukRedrk dh rqyuk

vk;ke	lewg	e/;eku	ekud fopyu	vUrj	Vh&eku	lkFkZdrk dk Lrj
प्रवाहिता	ग्रामीण क्षेत्र	42.16	9.68	58	5.72	0.01
	षहरी क्षेत्र	53.66	12.27			
लचीलापन	अनुसूचित जाति	31.73	7.51	58	2.46	0.01
	सामान्य श्रेणी	35.43	8.97			
मौलिकता	अनुसूचित जाति	14.81	4.32		14.80	0.01
	सामान्य श्रेणी	36.42	9.41			

सारणी संख्या –2 से प्रदत्त आँकड़ा का विष्लेशण से स्पश्ट है, कि प्रवाहिता आयाम के क्षेत्र में षहरी क्षेत्र के सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों का मध्यमान 53.66 प्राप्त हुआ जो कि वरीयता सूची में अधिकतम अर्थात् ग्रामीण व षहरी क्षेत्र के अनुसूचित जाजि एवम् सामान्य श्रेणी में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अंतर पाया गया।

fu"d"k %&

प्रस्तुत षोधपत्र में षोधार्थी ने यह पाया कि अनुसूचित जाति एवम् सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता में काफी अंतर पाया एवम् ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता क्षमता में कमी पायी गयी।

अतः ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के विद्यार्थी के लिए षिक्षक की अहम भूमिका होनी चाहिए। कि इस श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए सरकार से मार्ग दर्षन लेनी की आवष्यकता है, जिससे की इन श्रेणी के विद्यार्थियों की बौद्धिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास हो सके।

lanHk&lwph %&

1. मेहन्दी बाकर मैनुअल सृजनात्मक चिन्तन षब्दिक परीक्षण, 1973।
2. पाठक पी.डी. (2005) : ''षिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. राय, यारसनाथ एवं भटनागर, चाँच अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण, अग्रवाल, आगरा।
4. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. (1991) : ''मनोविज्ञान एवम् षिक्षा में साख्यिकी'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. मुहम्मद, सुलेमान (पाँचवा संस्करण, 2005) : मनोविज्ञान, षिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में साख्यिकी, मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, दिल्ली।
6. षर्मा, आर. ए. (2009) : ''षिक्षण अधिगम'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ–25001।
7. नई राश्ट्रीय षिक्षा निति (2020): पुश्ठ संख्या–254–340।
8. सिंह, मानवीर, (2014): बोर्ड के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके षैक्षिक बोडो के प्रभाव का अध्ययन। ISSN-2321-2853
9. अनाम, 2018 :सर्जनात्मकता, बाल विकास, Website:myamezing.blogspot.com.
10. दर्षन कोष, प्रगति प्रकाषन, मास्को, 9860, पृश्ठ–632 ISBN: Y-0090001062